CBKG-001

CBKG-001 भारतीय एवं वैश्विक परिप्रेक्ष्य में काल चिंतन

सत्रीय कार्य

(जनवरी, 2025 एवं जुलाई, 2025 सत्रों के लिये)

मानविकी विद्यापीठ

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय

मैदान गढ़ी, नई दिल्ली - 110068

भारतीय एवं वैश्विक परिप्रेक्ष्य में काल चिंतन : CBKG-001

सत्रीय कार्य (2025-26)

पाठ्यक्रम कोड : CBKG-001/2025-26

प्रिय छात्रो/छात्राओ,

यह सत्रीय कार्य शिक्षक जाँच सत्रीय कार्य (TMA) है। सत्रीय कार्य के लिये 100 अंक निर्धारित किये गये हैं। सत्रीय कार्य में पूरे पाठ्यक्रम से प्रश्न पूछे जायेंगे।

उद्देश्य : शिक्षक जाँच सत्रीय कार्य का उद्देश्य यह जाँचना है कि आपने पाठ्य सामग्री को कितना समझा है और आप उसे अपने शब्दों में कैसे प्रस्तुत कर सकते हैं। यहाँ पाठ्य सामग्री की पुनर्प्रस्तुति से तात्पर्य नहीं है वरन् अध्ययन के दौरान जो कुछ सीखा और समझा है उसे आप आलोचनात्मक ढंग से प्रस्तुत कर सकें।

निर्देश : सत्रीय कार्य आरम्भ करने से पूर्व निम्नलिखित बातों को ध्यान से पढ़िये:

1) अपनी उत्तर पुस्तिकाओं के पहले पृष्ठ के दाएँ सिरे पर अनुक्रमांक, नाम, पूरा पता और दिनाँक लिखिये।

2) बाईं ओर पाठ्यक्रम का शीर्षक, सत्रीय कार्य संख्या और अपने अध्ययन केन्द्र का उल्लेख करें जैसा आगे दिखाया गया है :

अनुक्रमांक : .....

नाम : .....

पता :.....

दिनाँक :.....

पाठ्यक्रम का नाम/कोड :.....

सत्रीय कार्य कोड :.....

अध्ययन केन्द्र का नाम/कोड :.....

सत्रीय कार्य के लिए आवश्यक निर्देश

1. अध्ययन: सबसे पहले सत्रीय कार्य को ध्यान से पढ़िए । फिर इससे संबंधित इकाईयों का सावधानीपूर्वक अध्ययन कीजिए । अंत में प्रत्येक प्रश्न के संबंध में कुछ विशेष बातें नोट कर लीजिए और उन्हें तार्किक ढ़ग से व्यवस्थित कीजिए।

2. अभ्यास: उत्तर का प्रारूप तैयार करने से पूर्व नोट की गई बातों पर विचार कीजिए। अनावश्यक बातों को हटा दीजिए और प्रत्येक बिन्दु पर विस्तार से विचार कीजिए । निबन्धात्मक या टिप्पणी परक प्रश्नों में आरम्भ और उपसंहार पर विशेष ध्यान दीजिए । उत्तर के आरम्भिक अंश में प्रश्न की संक्षिप्त व्याख्या और अपने उत्तर की दिशा का संकेत अवश्य दे देना चाहिए । मध्य भाग में आप उत्तर का मुख्य भाग आवश्यक विस्तार के साथ क्रमबद्धता और तार्किक ढ़ग से प्रस्तुत करें । उपसंहार में उत्तर का सार देना चाहिए ।

यह सुनिश्चित कर लीजिए कि :

क) आपका उत्तर तार्किक और सुसंगत हो,

ख) उत्तर सही ढ़ग से लिखा गया हो तथा आपकी अभिव्यक्ति शैली और प्रस्तुति के पूर्णतया अनुकूल हो,

ग) आपके लेखन में भाषागत त्रुटियों न हों, विशेष रूप से मात्रा और व्याकरण संबंधी गलतियों से बचें ।

3. प्रस्तुति: जब आप अपने उत्तर से पूर्णतया संतुष्ट हो जाएँ, तो उसे साफ़ और सुंदर अक्षरों में उत्तर पुस्तिका में लिख लीजिए तथा जिन बातों पर आप जोर देना चाहते हैं, उन्हें रेखांकित कर दीजिए ।

शुभकामनाओं के साथ ।

नोट: याद रखें कि परीक्षा में बैठने से पूर्व सत्रीय कार्य जमा कराना अनिवार्य है, अन्यथा आपको परीक्षा में बैठने की अनुमति नहीं दी जाएगी ।

सत्रीय कार्य जमा कराने की तिथियाँ :

जनवरी, 2025 सत्र के लिए : 30 अप्रैल, 2025

जुलाई, 2025 सत्र के लिए : 30 नवम्बर, 2025

सत्रीय कार्य : CBKG-001
भारतीय एवं वैश्विक परिप्रेक्ष्य में काल चिंतन

सत्रीय कार्य – CBKG-001/TMA/2025-26 पूर्णांक - 100

नोट – **इस सत्रीय कार्य में दिए गए सभी प्रश्न अनिवार्य हैं ।**

1. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए । **25 × 2 = 50**

1.1 वैदिक उद्धरणों के आधार पर काल सम्बन्धी भारतीय अवधारणा को स्पष्ट करें।

1.2 भारतीय दर्शन, पौराणिक साहित्य और काल की अवधारणा में क्या समानताएँ और भिन्नताएँ हैं?

1.3 जैन और बौद्ध साहित्य में काल की अवधारणा और वैदिक साहित्य के बीच साम्यता और भिन्नता पर चर्चा करें।

1.4 चक्रीय और एकरैखिक काल की अवधारणाओं को समझाएं और उनके ऐतिहासिक तथा सांस्कृतिक संदर्भ पर प्रकाश डालें।

2. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए । **15 × 2 = 30**

2.1 सृष्टि रचना के भारतीय मत और आधुनिक पाश्चात्य मत में काल की अवधारणा की क्या भूमिका है?

2.2 ग्रहों की भारतीय परिभाषा और उनके आधार की व्याख्या करें।

2.3 पृथ्वी की गति के प्रकारों का विवेचन करें और उनके कालगणना पर प्रभाव को समझाएं।

2.4 सूर्य की परिभ्रमण और संक्रान्तियों के बीच संबंध पर विस्तृत जानकारी दें।

2.5 भारतीय कालगणना में नक्षत्रों और राशियों के योगदान का विवेचन करें।

3. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए । **5 × 4 = 20**

3.1 पुराणों में काल के स्वरूप और उसकी परिभाषा का उल्लेख करें।

3.2 दिन और रात के बराबर होने की स्थिति को किस ज्योतिषीय सिद्धांत के आधार पर समझा जा सकता है?

3.3 पृथ्वी की गति और उसके कालगणना पर प्रभाव को संक्षिप्त में समझाएं।

3.4 काल शब्द का प्रयोग वेदों में कब और कहाँ किया गया है, इसका संक्षिप्त विश्लेषण करें।

3.5 कौन सा दर्शन काल को वस्तु के रूप में मानता है? इसके बारे में संक्षेप में बताएं।

3.6 जैनमत में कितने प्रकार के पदार्थ माने गए हैं?

3.7 नौ ग्रहों में छाया ग्रहों की पहचान और उनकी भूमिका पर विचार करें।

3.8 'कल्' धातु का अर्थ और उसकी काल-निर्धारण में भूमिका पर चर्चा करें।